

2 कुरिथियों

1 यह खत पौलुस की तरफ़ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है।

मैं कुरिथुस में अल्लाह की जमात और सूबा अखया में मौजूद तमाम मुकद्दसीन को यह लिख रहा हूँ।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3 हमारे खुदावंद ईसा मसीह के खुदा और बाप की तमज़ीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की तसल्ली का खुदा है। 4 जब भी हम मुसीबत में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी तसल्ली दे सकें। फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्योंकि जितनी कसरत से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं उतनी कसरत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नज़ात का बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती है। यों आप भी सब्र से वह कुछ बरदाश्त करने के काबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे हैं। 7 चुनौचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुरख़्ता रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल होती है।

8 भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह करना चाहते हैं जिसमें हम सूबा आसिया में फँस गए। हम पर दबाव इतना शदीद था कि उसे बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम जान से हाथ धो बैठे। 9 हमने महसूस किया कि हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुरदों को ज़िंदा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं

से हमारी मदद कर रहे हैं। यह कितनी खूबसूरत बात है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह के सामने सादादिली और ख़ुलूस से ज़िंदगी गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर इनहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल पर। दुनिया में और खासकर आपके साथ हमारा रवैया ऐसा ही रहा है। 13 हम तो आपको ऐसी कोई बात नहीं लिखते जो आप पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब कुछ समझ आएगा तब आप खुदावंद ईसा के दिन हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप पर।

15 चूँकि मुझे इसका पूरा यक़ीन था इसलिए मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि आपको दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर आप सूबा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियाँ करने में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ कि क्या मैंने यह मनसूबा यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लमहे में “जी हाँ” और “जी नहीं” कहते हैं? 18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम आपके साथ बात करते वक़्त “नहीं” को “हाँ” के साथ नहीं मिलाते। 19 क्योंकि अल्लाह का फ़रज़द ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं, सीलास और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने कभी भी “हाँ” को “नहीं” के साथ नहीं मिलाया बल्कि उसमें अल्लाह की हतमी “जी हाँ” वुजूद में आई। 20 क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों की “हाँ” है। इसलिए हम उसी के वसीले से “आमीन” (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह खुद हमें और आपको मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह करके मख़सूस किया है। 22 उसी ने हम पर अपनी मुहर लगाकर ज़ाहिर किया है कि हम उस की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहल-कुद्स देकर अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे खिलाफ गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के लिए कुरिथुस वापस न आया। 24 मतलब यह नहीं कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत करना चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ मिलकर खिदमत करते हैं ताकि आप खुशी से भर जाएँ, क्योंकि आप तो ईमान की मारिफत कायम हैं।

2

1 चुनाँचे मैंने फैसला किया कि मैं दुबारा आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको बहुत गम खाना पड़ेगा। 2 क्योंकि अगर मैं आपको दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे खुश करेगा? यह वह शख्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है। 3 यही वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं लोगों से गम खाऊँ जिन्हें मुझे खुश करना चाहिए। क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यकीन है कि मेरी खुशी आप सबकी खुशी है। 4 मैंने आपको निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा बहाकर लिख दिया। मकसद यह नहीं था कि आप गमगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता था कि आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत रखता हूँ।

मुजरिम को मुआफ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज्यादा सख्ती से बात नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूरा शख्स के लिए यह काफी है कि उसे जमात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7 अब ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ करके तसल्ली दें, वरना वह गम खा खाकर तबाह हो जाएगा। 8 चुनाँचे मैं इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैंने यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि क्या आप इमतहान में पूरे उतरेंगे और हर बात में ताबे रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ करते हैं उसे मैं भी मुआफ करता हूँ। और जो कुछ मैंने मुआफ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ करने की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी खातिर मसीह के हुज़ूर मुआफ किया है 11 ताकि इबलीस हमसे फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से ख़ूब वाकिफ़ हैं।

त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की खुशखबरी सुनाने के लिए त्रोआस गया तो खुदावंद ने मेरे लिए आगे खिदमत करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर सूबा मकिदुनिया चला गया।

मसीह में फ़तह

14 लेकिन खुदा का शुक़ है! वही हमारे आगे आगे चलता है और हम मसीह के कैदी बनकर उस की फ़तह मनाते हुए उसके पीछे पीछे चलते हैं। यों अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म खुशबू की तरह फैलाता है। 15 क्योंकि हम मसीह की खुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नजात पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू हैं जबकि बाज़ के लिए हम ज़िंदागीबख़्शा खुशबू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी निभाने के लायक़ है? 17 क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह अल्लाह के कलाम की तिजारत नहीं करते, बल्कि यह जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके भेजे हुए हैं हम खुलूसदिली से लोगों से बात करते हैं।

3

नए अहद के खादिम

1 क्या हम दुबारा अपनी खूबियों का ढंडोरा पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिंद हैं जिन्हें आपको सिफ़ारिशी ख़त देने या आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो खुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उसने हमारी खिदमत के ज़रीए लिख दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं बल्कि ज़िंदा खुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।

4 हम यह इसलिए यक़ीन से कह सकते हैं क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतमाद रखते हैं। 5 हमारे अंदर तो कुछ नहीं है जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लायक़ हैं। नहीं, हमारी लियाक़त अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी ने हमें नए अहद के खादिम होने के लायक़ बना दिया है। और यह अहद लिखी हुई शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि रूह पर,

क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें जिंदा कर देता है।

7 शरीअत के हुरूफ पत्थर की तख्तियों पर कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का जलाल जाहिर हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि इसराईली मूसा के चेहरे को लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल इतना तेज़ था जो अब मनसूख है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज़्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ करार देता है कहीं ज़्यादा जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ भी नहीं है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का जलाल बहुत था जो अब मनसूख है तो फिर उस नए निज़ाम का जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो कायम रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए बड़ी दिलेरी से खिदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिंद नहीं हैं जिसने शरीअत सुनाने के इखिताम पर अपने चेहरे पर निक़ाब डाल लिया ताकि इसराईली उसे तकते न रहें जो अब मनसूख है। 14 तो भी वह ज़हनी तौर पर अड़ गए, क्योंकि आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की जाती है तो यही निक़ाब कायम है। आज तक निक़ाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद सिर्फ़ मसीह में मनसूख होता है। 15 हाँ, आज तक जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह निक़ाब उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब भी कोई खुदावंद की तरफ़ रूजू करता है तो यह निक़ाब हटाया जाता है, 17 क्योंकि खुदावंद रूह है और जहाँ खुदावंद का रूह है वहाँ आज्ञादी है। 18 चुनौचे हम सब जिनके चेहरों से निक़ाब हटाया गया है खुदावंद का जलाल मुनअकिस करते और क़दम बक़दम जलाल पाते हुए मसीह की सूत में बदलते जाते हैं। यह खुदावंद ही का काम है जो रूह है।

4

मिट्टी के बरतनों में रूहानी खजाना

1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह खिदमत सौपी गई है इसलिए हम बेदिल नहीं हो जाते। 2 हमने छुपी हुई शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में तहरीफ़ करते हैं। बल्कि हमें अपनी सिफ़ारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों

पर हकीकत को जाहिर करते हैं तो हमारी नेकनामी खुद बखुद हर एक के ज़मीर पर जाहिर हो जाती है। ³ और अगर हमारी खुशाखबरी निक्काब तले छुपी हुई भी हो तो वह सिर्फ उनके लिए छुपी हुई है जो हलाक हो रहे हैं। ⁴ इस जहान के शरीर खुदा ने उनके ज़हनों को अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं रखते। इसलिए वह अल्लाह की खुशाखबरी की जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैगाम नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है। ⁵ क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैगाम सुनाते हैं कि वह खुदावंद है। अपने आपको हम ईसा की खातिर आपके खादिम करार देते हैं। ⁶ क्योंकि जिस खुदा ने फ़रमाया, “अंधेरे में से रौशनी चमके,” उसने हमारे दिलों में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से चमकता है।

⁷ लेकिन हम जिनके अंदर यह खज़ाना है आम मिट्टी के बरतनों की मानिंद है ताकि जाहिर हो कि यह ज़बरदस्त कुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। ⁸ लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं, लेकिन कोई हमें कुचलकर ख़त्म नहीं कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। ⁹ लोग हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते। ¹⁰ हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में जाहिर हो जाए। ¹¹ क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में ईसा की खातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है ताकि उस की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में जाहिर हो जाए। ¹² यों हममें मौत का असर काम करता है जबकि आपमें ज़िंदगी का असर।

¹³ कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “मैं ईमान लाया और इसलिए बोला।” हमें ईमान का यही रूह हासिल है इसलिए हम भी ईमान लाने की वजह से बोलते हैं। ¹⁴ क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने खुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। ¹⁵ यह सब कुछ आपके फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक पहुँच रहा है और नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देकर शुक़रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

ईमान की ज़िंदगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक जाहिरी तौर पर हम खत्म हो रहे हैं, लेकिन अंदर ही अंदर रोज़ बरोज़ हमारी तजदीद होती जा रही है। 17 क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी और पल-भर की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18 इसलिए हम देखी हुई चीज़ों पर गौर नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिज़ी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

5

1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा, एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने नहीं बनाया होगा। 2 इसलिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं और आसमानी घर पहन लेने की शदीद आरजू रखते हैं, 3 क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस पर आसमानी घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं ताकि ज़िंदगी वह कुछ निगल जाए जो फ़ानी है। 5 अल्लाह ने खुद हमें इस मक़सद के लिए तैयार किया है और उसी ने हमें रूहल-कुद्स को आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया है।

6 चुनाँचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज़ीर हैं उस वक़्त तक खुदावंद के घर से दूर हैं। 7 हम जाहिरी चीज़ों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते हैं। 8 हाँ, हमारा हौसला बुलंद है बल्कि हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना होकर खुदावंद के घर में रहें। 9 लेकिन खाह हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि खुदावंद को पसंद आएँ। 10 क्योंकि लाज़िम है कि हम सब मसीह के तख़्ते-अदालत के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज़्र मिलेगा जो उसने अपने बदन में रहते हुए किया है, खाह वह अच्छा था या बुरा।

मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती

11 अब हम खुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के सामने पूरे तौर पर जाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता हूँ कि हम आपके ज़मीर के सामने भी जाहिर हैं। 12 क्या हम यह बात करके दुबारा अपनी सिफ़ारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम पर फ़ख़र करने का मौक़ा दे रहे हैं ताकि

आप उनके जवाब में कुछ कह सकें जो जाहिरी बातों पर शेखी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते हैं। 13 क्योंकि अगर हम बेखुद हुए तो अल्लाह की खातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी खातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर कर देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सबके लिए इसलिए मुआ ताकि जो ज़िंदा हैं वह अपने लिए न जिँएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी खातिर मुआ और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी इस जावीए से देखते थे, लेकिन यह वक़्त गुज़र गया है। 17 चुनौचे जो मसीह में है वह नया मखलूक है। पुरानी ज़िंदगी जाती रही और नई ज़िंदगी शुरू हो गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की खिदमत की जिम्मादारी दी है। 19 इस खिदमत के तहत हम यह पैगाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और लोगों के गुनाहों को उनके जिम्मे न लगाया। सुलह कराने का यह पैगाम उसने हमारे सुपर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते आपसे मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की पेशकश को कबूल करें ताकि उस की आपके साथ सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी खातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ करार दिया जाए।

6

1 अल्लाह के हमखिदमत होते हुए हम आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फ़ज़ल आपको मिला है वह ज़ायान न जाए। 2 क्योंकि अल्लाह फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक़्त मैंने तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।” सुनें! अब क़बूलियत का वक़्त आ गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं बनते ताकि लोग हमारी खिदमत में नुक्स न निकाल सकें। 4 हाँ, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि अल्लाह के खादिम होते हुए हम हर हालत में अपनी नेकनामी ज़ाहिर करते हैं : जब हम

सब्र से मुसीबतें, मुश्किलात और आफतें बरदाश्त करते हैं, 5 जब लोग हमें मारते और कैद में डालते हैं, जब हम बेकाबू हुजूमों का सामना करते हैं, जब हम मेहनत-मशक्कत करते, रात के वक्त जागते और भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सब्र और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम रूहुल-कुद्स के वसीले से हक्रीकी मुहब्बत रखते, 7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की कुदरत से लोगों की खिदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें भी ज़ाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी खिदमत जारी रखते हैं, चाहे लोग हमारी इज़्जत करें चाहे बेइज़्जती, चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी खिदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दगाबाज़ करार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते मरते ज़िंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर क़ल्ल नहीं कर सकते। 10 हम गम खा खाकर हर वक्त ख़ुश रहते हैं, हम गरीब हालत में बहुतों को दौलतमंद बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ हासिल है।

11 कुरिथुस के अज़ीज़ो, हमने खुलकर आपसे बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो गया है। 12 जो जगह हमने दिल में आपको दी है वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आपसे जो मेरे बच्चे हैं दरखास्त करता हूँ कि जवाब में हमें भी अपने दिलों में जगह दें।

गैरमसीही असरात से खबरदार

14 गैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या ताल्लुक रख सकती है? 15 मसीह और इबलीस के दरमियान क्या मुताबिकत हो सकती है? ईमानदार का गैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह के मक़दिस और बुतों में क्या इत्फ़ाक हो सकता है? हम तो ज़िंदा खुदा का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है,

“मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा

और उनमें फिर्साँगा।

मैं उनका खुदा हूँगा,

और वह मेरी क़ौम होंगे।”

17 चुनौचे रब फ़रमाता है,

“इसलिए उनमें से निकल आओ

और उनसे अलग हो जाओ।
 किसी नापाक चीज़ को न छूना,
 तो फिर मैं तुम्हें कबूल करूँगा।
 18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा
 और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे,
 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है।”

7

1 मेरे अज़ीजो, यह तमाम वादे हमसे किए गए हैं। इसलिए आँ, हम अपने आपको हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और रूह को आलूदा कर देती है। और हम खुदा के खौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुकद्दस बनने के लिए कोशिशें करें।

पौलुस की खुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी से नाइनसाफी की, न किसी को बिगाड़ा या उससे गलत फ़ायदा उठाया। 3 मैं यह बात आपको मुजरिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अज़ीज हैं कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए तैयार हैं। 4 इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता हूँ और मैं आप पर बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावजूद मेरी खुशी की इंतहा नहीं।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा। 6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हुआओं को तसल्ली बख़्शाता है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़ज़ाई की। 7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उसके आने से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़ज़ा बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने हमें आपकी आरज़ू, आपकी आहो-ज़ारी और मेरे लिए आपकी सरगर्मी के बारे में रिपोर्ट दी। यह सुनकर मेरी खुशी मज़ीद बढ़ गई।

8 क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9 और उसने आपको तौबा तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब खुशी मनाता हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा है बल्कि इसलिए कि इस दुख ने आपको तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने

यह दुख अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा। 10 क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए इस्तेमाल करता है उससे तौबा पैदा होती है और उसका अंजाम नजात है। इसमें पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11 आप खुद देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या पैदा किया है : कितनी संजीदगी, अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना गुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी सरगरमी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि आप इस मामले में बेक़ुसूर हैं।

12 गरज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले के बारे में लिखूँ या उसके बारे में जिसके साथ ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि अल्लाह के हुज़ूर आप पर ज़ाहिर हो जाए कि आप हमारे लिए कितने सरगरम हैं। 13 यही वजह है कि हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई है बल्कि हम यह देखकर बेइंतहा खुश हुए कि तितुस कितना खुश था। वह क्यों खुश था? इसलिए कि उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14 उसके सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था, और मैं शर्मिंदा नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुस्त साबित हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची बातें बताई हैं उसी तरह तितुस के सामने आप पर हमारा फ़ख़र भी दुस्त निकला। 15 आप उसे निहायत अज़ीज़ हैं क्योंकि वह आप सबकी फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और काँपते हुए उसे खुशआमदीद कहा। 16 मैं खुश हूँ कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता हूँ।

8

यहदिया के गरीबों के लिए हदिया

1 भाइयो, हम आपकी तबज़्जुह उस फ़ज़ल की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सूबा मकिदुनिया की जमातों पर किया। 2 जिस मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त आजमाइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा खुशी और शदीद ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। 3 मैं गवाह हूँ कि जितना वह दे सके उतना उन्होंने दे दिया बल्कि इससे भी ज़्यादा।

अपनी ही तरफ से 4 उन्होंने बड़े जोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया के मुकद्दसीन की खिदमत करने का मौका दें, हम भी देने के फ़ज़ल में शरीक होना चाहते हैं। 5 और उन्होंने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको खुदावंद के लिए मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया। 6 इस पर हमने तितुस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो उसने शुरू किया था। 7 आपके पास सब कुछ कसरत से पाया जाता है, खाह इमान हो, खाह कलाम, इल्म, मुकम्मल सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो। अब इस बात का खयाल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

8 मेरी तरफ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र में आपकी भी मुहब्बत परख रहा हूँ कि वह कितनी हक़ीक़ी है। 9 आप तो जानते हैं कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़ल किया है, कि अगरचे वह दौलतमंद था तो भी वह आपकी खातिर गरीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन जाएँ।

10 इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमात थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। 11 अब उसे तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर रखा है। देने का जो शौक आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। 12 क्योंकि अगर आप देने का शौक रखते हैं तो फिर अल्लाह आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं दे सकते।

13 कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप खुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिएँ। 14 इस वक़्त तो आपके पास बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास बहुत होगा तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों आपके हालात कुछ बराबर रहेंगे, 15 जिस तरह कलामे-मुकद्दस में भी लिखा है, “जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।”

तितुस और उसके साथी

16 खुदा का शुक है जिसने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता हूँ। 17 जब हमने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगरम होकर खुद बखुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ। 18 हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया जिसकी खिदमत की तारीफ़ तमाम जमातों करती हैं, क्योंकि उसे अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। 19 उसे न सिर्फ़ आपके पास जाना है बल्कि जमातों ने उसे मुकर्रर किया है कि जब हम हदिये को यरूशलम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए। यों हम यह खिदमत अदा करते वक़्त खुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगरमी का इज़हार करेंगे।

20 क्योंकि उस बड़े हदिये के पेशे-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक करने का मौक़ा मिले। 21 हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ खुदावंद की नज़र में दुस्त है बल्कि इनसान की नज़र में भी।

22 उनके साथ हमने एक और भाई को भी भेज दिया जिसकी सरगरमी हमने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगरम हो गया है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है। 23 जहाँ तक तितुस का ताल्लुक है, वह मेरा साथी और हमखिदमत है। और जो भाई उसके साथ हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़ज़त का बाइस हैं। 24 उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह ज़ाहिर करें कि हम आप पर क्यों फ़ख़र करते हैं। फिर यह बात खुदा की दीगर जमातों को भी नज़र आएगी।

9

मुक़द्दसीन की मदद

1 असल में इसकी ज़रूरत नहीं कि मैं आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुक़द्दसीन की खिदमत में करना है। 2 क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदुनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़ख़र करता रहा हूँ कि “अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तैयार थे।” यों आपकी सरगरमी ने ज़्यादातर लोगों को खुद देने के लिए उभारा। 3 अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़ख़र बेबुनियाद न निकले बल्कि जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें। 4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदुनिया के कुछ भाइयों को साथ लेकर

आपके पास पहुँचूँगा तो आप तैयार न हूँ। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी शरमिंदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद किया है।⁵ इसलिए मैंने इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास आकर उस हृदये का इंतज़ाम करें जिसका वादा आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह हृदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पड़ा। इसके बजाए आपकी सखावत जाहिर हो जाए।

⁶ याद रहे कि जो शख्स बीज को बचा बचाकर बोता है उस की फ़सल भी उतनी कम होगी। लेकिन जो बहुत बीज बोता है उस की फ़सल भी बहुत ज़्यादा होगी।
⁷ हर एक उतना दे जितना देने के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है।⁸ और अल्लाह इस काबिल है कि आपको आपकी ज़रूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर लिहाज़ से काफ़ी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर किस्म का नेक काम कर सकेंगे।⁹ चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “उसने फ़ैयाज़ी से ज़रूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की रास्तबाज़ी हमेशा तक कायम रहेगी।”¹⁰ खुदा ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको भी बीज देकर उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी रास्तबाज़ी की फ़सल उगने देगा।¹¹ हाँ, वह आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना देगा और आप हर मौक़े पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनाँचे जब हम आपका हृदिया उनके पास ले जाएंगे जो ज़रूरतमंद हैं तो वह खुदा का शुक़ करेंगे।¹² यों आप न सिर्फ़ मुक़द्दसीन की ज़रूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस खिदमत से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बड़े जोश से खुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे।¹³ आपकी खिदमत के नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देंगे। क्योंकि आपकी उन पर और तमाम इमानदारों पर सखावत का इज़हार साबित करेगा कि आप मसीह की खुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं।¹⁴ और जब वह आपके लिए दुआ करेंगे तो आपके आरज़ूमंद रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना बड़ा फ़ज़ल दे दिया है।¹⁵ अल्लाह का उस की नाकाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक़ हो!

10

पौलुस अपनी खिदमत का दिफ़ा करता है

1 मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं आपके स्वरू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आपसे दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नरमी के नाम में 2 मैं आपसे मिन्नत करता हूँ कि मुझे आपके पास आकर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावी है। क्योंकि फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इसकी ज़रूरत होगी। 3 बेशक हम इनसान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह जंग नहीं लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं, बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से किले ढा देने की कुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत खयालात के ढाँचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान के खिलाफ़ खड़ी हो जाती है। और हम हर खयाल को कैद करके मसीह के ताबे कर देते हैं। 6 हों, आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तैयार होंगे।

7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरी बातों पर गौर कर रहे हैं। अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह मसीह का है तो वह इसका भी खयाल करे कि हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। 8 क्योंकि अगर मैं उस इख्तियार पर मज़ीद फ़रखर भी करूँ जो खुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शर्मिदा नहीं हूँगा। गौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने का नहीं बल्कि आपकी रूहानी तामीर करने का इख्तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे जैसे मैं आपको अपने ख़तों से डराने की कोशिश कर रहा हूँ। 10 क्योंकि बाज़ कहते हैं, “पौलुस के ख़त जोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह खुद हाज़िर होता है तो वह कमज़ोर और उसके बोलने का तर्ज़ हिक़ारतआमेज़ है।” 11 ऐसे लोग इस बात का खयाल करें कि जो बातें हम आपसे दूर होते हुए अपने ख़तों में पेश करते हैं उन्हीं बातों पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आँगे।

12 हम तो अपने आपको उनमें शुमार नहीं करते जो अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते रहते हैं, न अपना उनके साथ मुवाज़ना करते हैं। वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते हैं और अपना मुवाज़ना अपने आपसे करते हैं। 13 लेकिन हम मुनासिब हद से ज्यादा फ़रखर नहीं करेंगे बल्कि सिर्फ़ उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुकर्रर किया है। और आप भी इस हद के अंदर आ जाते हैं। 14 इसमें हम मुनासिब हद से ज्यादा फ़रखर नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह की ख़ुशख़बरी लेकर आप तक पहुँच गए

हैं। अगर ऐसा न होता तो फिर और बात होती। ¹⁵ हम ऐसे काम पर फ़ख़र नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से सरंजाम दिया गया है। इसमें भी हम मुनासिब हदों के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों हमारी कदरो-क्रीमत भी अल्लाह की मुकर्ररा हद तक बढ़ जाए। खुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़ जाए ¹⁶ कि हम अल्लाह की खुशख़बरी आपसे आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम पर फ़ख़र नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।

¹⁷ कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “फ़ख़र करनेवाला खुदावंद ही पर फ़ख़र करे।” ¹⁸ जब लोग अपनी तारीफ़ करके अपनी सिफ़ारिश करते हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि खुदावंद ही इसकी तसदीक़ करे।

11

पौलस और झूटे रसूल

¹ खुदा करे कि जब मैं अपनी हमाक़त का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बरदाशत करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाशत करें, ² क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी ग़ैर रखता हूँ। मैंने आपका रिश्ता एक ही मर्द के साथ बाँधा, और मैं आपको पाकदामन कुँवारी की हैसियत से उस मर्द मसीह के हुज़ूर पेश करना चाहता था। ³ लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि जिस तरह सॉप ने अपनी चालाकी से हव्वा को धोका दिया उसी तरह आपकी सोच भी बिगड़ जाएगी और वह खुलूसदिली और पाक लग्न खत्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते हैं। ⁴ क्योंकि आप खुशी से हर एक को बरदाशत करते हैं जो आपके पास आकर एक फ़रक़ किस्म का ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी स्ह और ऐसी “खुशख़बरी” कबूल करते हैं जो उस स्ह और खुशख़बरी से बिलकुल फ़रक़ है जो आपको हमसे मिली थी।

⁵ मेरा नहीं ख़याल कि मैं इन नाम-निहाद ‘खास’ रसूलों की निसबत कम हूँ। ⁶ हो सकता है कि मैं बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया है।

7 मैंने अल्लाह की खुशखबरी सुनाने के लिए आपसे कोई भी मुआवजा न लिया। यों मैंने अपने आपको नीचा कर दिया ताकि आपको सरफराज़ कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे ग़लती हुई? 8 जब मैं आपकी खिदमत कर रहा था तो मुझे खुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। 9 और जब मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई मकिदुनिया से आए उन्होंने मेरी ज़रूरियात पूरी की। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा भी नहीं बनूंगा। 10 मसीह की उस सच्चाई की कसम जो मेरे अंदर है, अखया के पूरे सबे में कोई मुझे इस पर फ़खर करने से नहीं रोकेगा। 11 मैं यह क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत नहीं रखता? खुदा ही जानता है कि मैं आपसे मुहब्बत रखता हूँ।

12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता रहूंगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसूलों को वह मौका न दूँ जो वह ढूँड रहे हैं। क्योंकि यही उनका मक़सद है कि वह फ़खर करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं। 13 ऐसे लोग तो झूटे रसूल हैं, धोकेबाज़ मजदूर जिन्होंने मसीह के रसूलों का रूप धार लिया है। 14 और क्या अजब, क्योंकि इबलीस भी नूर के फ़रिश्ते का रूप धारकर घुमता-फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि उसके चले रास्तबाज़ी के खादिम का रूप धारकर घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के मुताबिक ही होगा।

रसूल होने की वजह से पौलस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक न समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम अज़ कम मुझे अहमक की हैसियत से क़बूल करें ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फ़खर करूँ। 17 असल में जो कुछ मैं अब बयान कर रहा हूँ वह खुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं अहमक की तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन चूँकि इतने लोग जिस्मानी तौर पर फ़खर कर रहे हैं इसलिए मैं भी फ़खर करूँगा। 19 बेशक आप खुद इतने दानिशमंद हैं कि आप अहमकों को खुशी से बरदाश्त करते हैं। 20 हाँ, बल्कि आप यह भी बरदाश्त करते हैं जब लोग आपको गुलाम बनाते, आपको लूटते, आपसे ग़लत फ़ायदा उठाते, नखरे करते और आपको थप्पड़ मारते हैं। 21 यह कहकर मुझे शर्म आती है कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़ख़र करने की ज़रूरत करे (मैं अहमक की-सी बात कर रहा हूँ) तो मैं भी उतनी ही ज़रूरत करूँगा। ²² क्या वह इब्रानी है? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली है? मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद है? मैं भी हूँ। ²³ क्या वह मसीह के खादिम है? (अब तो मैं गोया बेख़ुद हो गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!) मैं उनसे ज़्यादा मसीह की खिदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक्कत की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा, मेरे ज़्यादा सख़्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने के खतरों में रहा हूँ। ²⁴ मुझे यहदियों से पाँच दफ़ा 39 कोड़ों की सज़ा मिली है। ²⁵ तीन दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार किया गया। जब मैं समुंदर में सफ़र कर रहा था तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात और दिन समुंदर में गुज़ारना पड़ा। ²⁶ मेरे बेशुमार सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ा, दरियाओं और डाकुओं का खतरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहदियों के हमलों का खतरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह खतरे मौजूद रहे, खाह मैं शहर में था, खाह ग़ैरआबाद इलाके में या समुंदर में। झूटे भाइयों की तरफ़ से भी खतरे रहे हैं। ²⁷ मैंने जॉफ़िशानी से सख़्त मेहनत-मशक्कत की है और कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने बहुत रोज़े रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तज़रबा हुआ है। ²⁸ और यह उन फ़िकरों के अलावा है जो मैं खुदा की तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। ²⁹ जब कोई कमज़ोर है तो मैं अपने आपको भी कमज़ोर महसूस करता हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता है तो मैं उसके लिए शदीद रंजिश महसूस करता हूँ।

³⁰ अगर मुझे फ़ख़र करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत ज़ाहिर करती हैं। ³¹ हमारा खुदा और खुदावंद ईसा का बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। ³² जब मैं दमिश्क़ शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुकर्रर किए ताकि वह मुझे गिरफ़्तार करे। ³³ लेकिन शहर की फ़सील में एक दरिचा था, और मुझे एक टोकरे में रखकर वहाँ से उतारा गया। यों मैं उसके हाथों से बच निकला।

12

पौलुस पर कई बातों का इनकिशाफ़

1 लाजिम है कि मैं कुछ और फ़ख़र करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और इनकिशाफ़ात का ज़िक्र करूँगा जो खुदावंद ने मुझे पर ज़ाहिर किए। 2 मैं मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल हुए छीनकर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि उसे यह तज़रबा जिस्म में या इसके बाहर हुआ। खुदा जानता है। 3 हाँ, खुदा ही जानता है कि वह जिस्म में था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ 4 कि उसे छीनकर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उसने नाक्राबिले-बयान बातें सुनीं, ऐसी बातें जिनका ज़िक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं। 5 इस किस्म के आदमी पर मैं फ़ख़र करूँगा, लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत को ज़ाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़ख़र करना चाहता तो इसमें अहमक न होता, क्योंकि मैं हकीकत बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस पर मुनहसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ। कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की वजह से एक कौंटा चुभो दिया गया, एक तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे जिस्म में धँसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इबलीस का यह पैगंबर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो जाऊँ। 8 तीन बार मैंने खुदावंद से इल्तिजा की कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9 लेकिन उसने मुझे यही जवाब दिया, “मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है, क्योंकि मेरी कुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमज़ोर हालत ही में होता है।” इसलिए मैं मज़ीद खुशी से अपनी कमज़ोरियों पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह है कि मैं मसीह की खातिर कमज़ोरियों, गालियों, मजबूरियों, ईज़ारसानियों और परेशानियों में खुश हूँ, क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं ताक़तवर होता हूँ।

पौलुस की कुरिथियों के लिए फ़िक्र

11 मैं बेवुकूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद ख़ास रसूलों के मुकाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम नहीं हूँ। 12 जो मुतअद्दि इलाही निशान, मोज़िज़े और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी से आपके

दरमियान किए गए। 13 जो खिदमत मैंने आपके दरमियान की, क्या वह खुदा की दीगर जमातों में मेरी खिदमत की निसबत कम थी? हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक सिर्फ़ यह था कि मैं आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझसे इसमें ग़लती हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ का बाइस नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं आपका माल नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आखिर बच्चों को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी खुशी से आपके लिए हर खर्चा उठा लूँगा बल्कि अपने आपको भी खर्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज़्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके से अपने जाल में फँसा लिया। 17 किस तरह? जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने उनमें से किसी के ज़रिए आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? 18 मैंने तितुस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया। क्या तितुस ने आपसे ग़लत फ़ायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हुज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अज़ीज़ो, जो कुछ भी हम करते हैं हम आपकी तामीर करने के लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद आएगी, न मेरी हालत आपको। मुझे डर है कि आपमें झगडा, हसद, गुस्सा, खुदग़रज़ी, बुहतान, गपबाज़ी, गुस्स और बेतरतीबी पाई जाएगी। 21 हाँ, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी, जिनाकारी और ऐयाशी से तौबा नहीं की।

13

आखिरी तंबीह और सलाम

1 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़ दो या तीन गवाहों से की जाए। 2 जब

मैं दूसरी दफा आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको आगाह किया था। अब मैं आपसे दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न दीगर लोग। ³ जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके साथ सुलूक में मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह आपके दरमियान ही अपनी कुव्वत का इज़हार करता है। ⁴ क्योंकि अगरचे उसे कमज़ोर हालत में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह की कुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की कुदरत से हम आपकी खिदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा हैं।

⁵ अपने आपको जाँचकर मालूम करें कि क्या आपका ईमान कायम है? खुद अपने आपको परखें। क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि आपका ईमान नामकबूल साबित होता। ⁶ लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा ताल्लुक है हम नामकबूल साबित नहीं हुए हैं। ⁷ हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि आपसे कोई गलती न हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें खुद नाकाम क्यों न करार दें। ⁸ क्योंकि हम हकीकत के खिलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके हक़ में। ⁹ हम खुश हैं जब आप ताकतवर हैं गो हम खुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप कामिल हो जाएँ। ¹⁰ यही वजह है कि मैं आपसे दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा तो मुझे अपना इख्तियार इस्तेमाल करके आप पर सख्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि खुदावंद ने मुझे यह इख्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि आपको तामीर करने के लिए दिया है।

¹¹ भाइयो, आखिर में मैं आपको सलाम कहता हूँ। सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसला-अफ़ज़ाई करें, एक ही सोच रखें और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का खुदा आपके साथ होगा।

¹² एक दूसरे को मुकद्दस बोसा देना। तमाम मुकद्दसीन आपको सलाम कहते हैं।

¹³ खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह की मुहब्बत और रूहुल-कुद्स की रिफ़ाक़त आप सबके साथ होती रहे।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299